# आग अपने ही आंगन की झुलसाए है..

कमला भसीन

एक ओर अक्सर सुनने में आता है कि "घर जन्नत है।"

"घर की चारदीवारी में औरतें सुरक्षित हैं।" "घर में रहने में ही औरत की इज्ज़त और आबरू है।" "घर-परिवार ऐसी जगह है जहां अमन और चैन है।" "बाहर की सब परेशानियां और सारी थकान घर पहुंच कर दूर हो जाती हैं।"

दूसरी ओर रोज अखबारों में पढ़ने या सुनने को मिलता है कि—

"पत्नी से सब्जी में नमक ज्यादा पड़ गया तो पति ने उसे जान से मार दिया।"

"पति से घर खर्च के लिए पैसे मांगे तो पति ने उसे मारा।"

"कम दहेज के कारण ससुराल वालों ने बहू को जला दिया।"

"ससुर ने बहू पर बलात्कार करने की कोशिश की। बहू चीखी-चिल्लाई तो लोग जमा हो गए। बहू बलात्कार से बच गई, पर बाद में पति ने उसकी नाक काट दी, क्योंकि उसने परिवार की बदनामी कराई थी।"

संभवतः कुछ ही घर ऐसे होंगे जहां सुख, शांति और इंसाफ हो, जहां औरत की इज्ज़त और हिफ़ाजत हो। बहुत से घरों में न चैन है, न शांति, न प्यार और न आपसी समझ।

रक्षक भक्षक बन जाते हैं और औरतों पर घर की चारदीवारी में तरह-तरह के जुल्म किए जाते हैं। उनके अपने सगे उन पर जुल्म ढाते हैं। अपने ही घर की आग उन्हें जलाती है। उनके रक्षक ही उनके भक्षक बन जाते हैं।

परिवार में औरतों पर होने वाले जुल्म के अलग-अलग रूप हैं। सबसे बड़ा जुल्म उसके पैदा होते ही किया जाता है, जब उसे देखते ही घरवालों के चेहरे उतर जाते हैं। "हाय राम! लड़की हुई है।" आप अंदाज कीजिए, उसके पैदा होने को बदशगुनी माना जाए और खुशी की जगह मातम मनाया जाए, थाल की जगह सूप बजाया जाए।

*जिसका पैदा होना ही अपशकुन है, नापाक है*
*औरत की ज़िंदगी ये ज़िंदगी क्या खाक है*

दूसरा जुल्म है पैदा होने के बाद लड़की को कम प्यार, कम खुराक, कम देखभाल और कम दवा आदि देना। जिस घर में इस तरह का भेदभाव खुले आम हो उस घर में औरत के चैन या

हिफ़ाजत की बात कैसे की जा सकती है। वहां तो लड़कियों के नन्हें दिलों में घुटन और उनके चेहरों पर लाचारी ही होती है।

*अपनी मां ही बेटी को कम से कम परसा करे*
*अपने ही आंगन में वह इंसाफ को तरसा करे*

बेटियों के साथ किया जाने वाला भेदभाव अनेक घरों में बहुत खतरनाक बन जाता है। हाल में खबर छपी थी कि एक पढ़ा-लिखा पिता अपनी साल डेढ़ साल की बेटी से पीछा छुड़ाने के लिए उसे पास के एक शहर में छोड़ आया। कई बार कचरे के ढेर में नई पैदा हुई लड़कियां पाई जाती हैं। कई बार बेटियां आत्महत्या कर लेती हैं अपनी और अपने घरवालों की हालत पर तरस खाकर और अपनी रोज़ाना की बेइज्ज़ती से तंग आकर।

भारत में ऐसी ही लड़कियों की हालत पर दावा किया जाता है कि यहां नारियां पूजी जाती हैं!

*बेटे को राजा कहें, दीपक कहें, सम्मान दें*
*बस चले तो बेटियों को जान से ही मार दें*

हमारे परिवारों में औरतों पर होने वाले ज़ुल्म की एक और भयंकर शक्ल है—बेटियों और बहुओं के साथ नाजायज यौन संबंध। कई बार बाप बेटी के साथ यौन संबंध जोड़ लेता है और सालों तक उसे यह ज़ुल्म सहना पड़ता है। कई बार बहू को देवर, जेठ या ससुर के गलत इरादों से जूझना पड़ता है। छोटी बच्चियों को हर पुरुष रिश्तेदार से खतरा हो सकता है। हम सबको इस बदचलनी का निजी ज्ञान भी होता है, पर हम चुप्पी लगाए रहती हैं, क्योंकि—

*बदनीयत से ये डरें और हर नज़र से ये डरें*
*फरियाद ये किससे करें हाथ अपनों के बढ़ें*

घर का अंधेरा ढांपे रखता है इन पापों को, लेकिन अगर आंखें खोलकर देखें और इस सचाई को नकारें नहीं तो हम देखेंगे कि घर-घर में बच्चियां और औरतें ज़ुल्मों की दलदल में फंसी हैं। पर ढिंढोरा परिवार की पवित्रता का ही पीटा जाता है।

घर में औरत को पीटना आम बात है। कुछ औरतें रोज़ाना पीटी जाती हैं, कुछ कभी-कभी। कुछ औरतों के पति उन्हें सिगरटों से जलाते हैं। कुछ काम पर जाते समय बाहर ताला लगा जाते हैं ताकि उनकी पत्नी किसी से मिल न सके।

घरेलू मामला कह कर घरों में होने वाली हिंसा को नकार दिया जाता है। पड़ोसी भी ऐसे मामलों में बचाव करने से कतराते हैं। औरत अपनी किस्मत समझकर पिटती रहती है। इसके अलावा उसके सामने बहुत कम रास्ते हैं। पुरुष पत्नी को पीटना अपना अधिकार और मर्दानगी का सबूत समझता है, जबकि सचाई यह है कि पत्नी पर मारपीट घरेलू या निजी मामला नहीं है। मारपीट, बलात्कार और हत्या सार्वजनिक अपराध हैं, चाहे घर में हों या घर के बाहर। किसी भी इंसान को दूसरे पर आक्रमण करने का हक़ नहीं है।

अगर मारपीट कुछ घरों में ही होती तो कहा जा सकता था कि इक्की-दुक्की औरत पर ज़ुल्म होता है। पर घरेलू मारपीट बहुत घरों में हो रही है। इस चलन को घरेलू मामला कैसे माना जा सकता है। इसकी जड़ें हमें समाज में ही ढूंढनी होंगी। यह गलत है कि औरत पारिवारिक हिंसा को अपनी किस्मत मान ले या स्वयं को दोषी ठहराए। जब तक औरतें स्वयं इन अपराधों पर पर्दा डाले रखेंगी और उन्हें कबूलती रहेंगी तब तक ऐसे अपराध रुकेंगे नहीं। खामोशी का मतलब है

अपनी बेटियों को मारपीट विरासत में देना।

हमारे देश में पारिवारिक हिंसा पर न अधिक बातचीत हुई है, न ही जांच-पड़ताल। अमेरिका में इस बारे में अध्ययन हुआ जिससे पता चला कि लगभग पचास प्रतिशत परिवारों में पत्नियां पीटी जाती हैं। भारत में अक्सर माना जाता है कि मारपीट सिर्फ निचले तबके में होती है। पढ़े-लिखे और खाते-पीते तबकों में नहीं होती। यह भी मान्यता है कि पुरुष शराब के नशे में मारपीट करते हैं और मारपीट सिर्फ जवान औरतों व असहाय या अनपढ़ औरतों की होती है।

ये सभी मान्यताएं गलत हैं। कुछ वर्ष पहले बंबई की एक महिला संस्था ने 25 मध्यम-वर्गीय और 25 गरीब औरतों का अध्ययन किया जो अपने घरों में पिटा करती थीं जिससे नीचे लिखी जानकारी मिली—

पिटने वाली औरतों में 16 से 65 वर्ष की औरतें थीं, यानि किसी भी उम्र की औरत इस जुल्म से परे नहीं है।

इनमें अनपढ़ औरतो से एम.ए. पास औरतें भी थीं।

मारने वाले पतियों में अनपढ़ मज़दूरों से लेकर पढ़े-लिखे डाक्टर, वकील, अध्यापक और व्यापारी शामिल थे।

कुछ औरतें बड़े परिवारों की थीं और कुछ छोटे परिवारों की थीं। बच्चों वाली औरतें और बिना बच्चों वाली दोनों थीं।

पचास प्रतिशत औरतें शादी के पहले छः महीने में ही पिटीं।

अधिकतर पुरुष मारपीट करते समय शराब के नशे में नहीं होते।

इससे तो साबित होता है कि हर वर्ग की औरत घर में हिंसा की शिकार बन सकती है। फर्क यह है कि निम्न वर्ग की औरत जब पिटती है तब पूरे मुहल्ले को पता लग जाता है, जबकि ऊंचे घरों की औरतें ऊंची व मोटी दीवारों वाले घरों में पिटती हैं और उन पर होने वाली हिंसा की खबर किसी को नहीं होती। उन्हें अपने परिवार की इज्ज़त की भी फिक्र होती है, इसलिए वे इस बारे में किसी से बताती नहीं।

### मारपीट किस कारण?

पत्नी को पीटने का बहाना कुछ भी हो सकता है, जैसे उसने खाना ठीक नहीं बनाया या पैसे अधिक खर्च कर दिए या गैर मर्द से बात कर ली। ऐसा कोई कारण पत्नी भी ढूंढ सकती है, जैसे पति

समय पर नहीं लौटा या शराब पीकर आया। तब औरत अपने पति को क्यों नहीं पीटती?

कहा जाता है कि पति परेशान होकर घर लौटता है और खीज अपनी औरत पर निकालता है। पर खीजती पत्नियां भी हैं। घर के कभी न खत्म होने वाले काम, बच्चों का रोना-धोना और लोगों के ताने। पत्नियां क्यों नहीं खीज अपने पतियों पर निकालतीं?

इस मारपीट का बड़ा कारण मेरी समझ में समाज का पुरुष-सत्तात्मक ढांचा है। समाज की यह मान्यता है कि स्त्री पुरुष के आधीन है, वह पुरुष की संपत्ति है, पुरुष जो चाहे उसके साथ कर सकता है। पुरुष मालिक है और पत्नी उसकी दासी। ऐसी मान्यताओं को दृढ़ करने वाली पुरुष-प्रधान समाज में सैकड़ों कहावतें हैं, जैसे—

*ढोर गंवार, शूद्र, पशु, नारी*
*ये सब ताड़न के अधिकारी*

आजकल फिल्मों में औरतों पर हिंसा का खुला प्रचार होता है। विज्ञापन स्त्री को वस्तु मात्र बना देते हैं, केवल शरीर। यदि परिवार में ऊंच-नीच होगा तो समाज में भी अवश्य होगा। अगर घर घिनौने अपराधों से भरे होंगे तो वहां स्त्री, पुरुष और बच्चे

चैन की सांस कैसे लेंगे? मारपीट करने वाला डर पैदा कर सकता है, प्यार नहीं।

घरों में होने वाली हिंसा को रोकना ज़रूरी है। यह कानूनी अपराध भी है। इसे रोकने का सबसे पहला कदम यह है कि इस हिंसा पर बातचीत हो और उसका पर्दाफ़ाश हो। हिंसा व अन्याय की बात करने में शर्म कैसी? जब ज्यादा औरतें इस पर चर्चा करेंगी तो मारने वाले पुरुष चौकेंगे और शर्माएंगे।

दूसरे, हम यह मानकर चलें कि एक इंसान को दूसरे इंसान को मारने का हक़ नहीं है। हमें इस धारणा को चुनौती देनी है कि स्त्री पुरुष के आधीन है। यदि हम समाज में समानता की बात करते हैं तो घरों में समानता से डरते क्यों हैं? स्त्रियों को बराबरी का दर्जा पाने के लिए स्वयं लड़ना होगा और कुर्बानी देनी होगी।

पारिवारिक हिंसा की शिकार औरतों को कानूनी सलाह की भी ज़रूरत है और ऐसे आश्रमघरों की ज़रूरत है जहां वे सहारा और हिम्मत पा सकें। बड़े शहरों में महिला संस्थाएं ऐसे घर बना रही हैं।

कैसी अजीब बात है कि जो औरतें बराबरी या इंसाफ की बात उठाती हैं उनके बारे में कहा जाता है कि वे घर का चैन लूट रही हैं। सच यह है कि बहुत से घरों में चैन-शांति है ही नहीं। जिसे हम शांति समझते हैं वह कब्रिस्तान की खौफनाक शांति है जो औरतों की इच्छाओं और उनकी इज्ज़त की लाशों पर खड़ी है। जो औरतें पारिवारिक हिंसा के खिलाफ आवाज़ उठाती हैं वे अपने परिवारों को असली मानों में सुखी घर बनाना चाहती हैं—ऐसे घर जहां प्यार, आपसी समझ और एक-दूसरे की इज्ज़त हो, ऐसे घर जहां बच्चे शांति और बराबरी के पाठ सीखें। □